

## बिन्दू रूप की स्थिति सहज कैसे बने?

सभी जिस स्थिति में अभी बैठे हैं, उसको कौन सी स्थिति कहेंगे? व्यक्त में अव्यक्त स्थिति है? बापदादा से मुलाकात करते समय बिन्दु रूप की स्थिति में स्थित रह सकते हो? (हरेक ने अपना- अपना विचार सुनाया) बिन्दु रूप की स्थिति विशेष किस समय बनती है? जब एकान्त में बैठते हो तब या चलते फिरते भी हो सकती है? अन्तिम पुरुषार्थ याद का ही है। इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है। बिन्दु रूप की स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि नाम दो कहते हैं तो जरूर दोनों के अनुभव में भी अन्तर होगा। चलते-फिरते बिन्दू रूप की स्थिति इस समय कम भी नहीं लेकिन ना के बराबर ही कहें। इसका भी अभ्यास करना चाहिए। बीच-बीच में एक दो मिनट भी निकाल कर इस बिन्दी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते-फिरते हुए ट्रैफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। अगर यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो बिन्दू रूप की पावरफुल स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे? इसलिए यह अभ्यास करना आवश्यक है। बीच-बीच में यह प्रैक्टिस प्रैक्टिकल में करते रहेंगे तो जो आज यह बिन्दु रूप की स्थिति मुश्किल लगती है वह ऐसे सरल हो जायेगी जैसे अभी मैजारिटी को अव्यक्त स्थिति सहज लगती है। पहले जब अभ्यास शुरू किया तो व्यक्त में अव्यक्त स्थिति में रहना भी मुश्किल लगता था। अभी अव्यक्त स्थिति में रह कार्य करना जैसे सरल होता जा रहा है वैसे ही यह बिन्दुरूप की स्थिति भी सहज हो जायेगी। अभी महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। समझा।

फरिश्ता रूप की स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति जिसकी सदाकाल रहती है वह बिन्दुरूप में भी सहज स्थित हो सकेगा। अगर अव्यक्त स्थिति नहीं हैं तो बिन्दु रूप में स्थित होना भी मुश्किल लगता है। इसलिए अभी इसका भी अभ्यास करो। शुरू शुरू में अव्यक्त स्थिति का अभ्यास करने के लिए कितना एकान्त में बैठ अपना व्यक्तिगत पुरुषार्थ करते थे। वैसे ही इस फाइनल स्टेज का भी पुरुषार्थ बीच-बीच में समय निकाल करना चाहिए। यह है फाइनल सिद्धि की स्थिति। इस स्थिति को पहुँचने के लिए एक बात का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। आजकल वह गवर्मेंट कौन सी स्कीम बनाती है? उन्हीं के प्लैन्स भी सफल तब होते हैं जब पहले-पहले यह लक्ष्य रखते हैं कि सभी बातों में जितना हो सके इतनी बचत हो। बचत की योजना भी करते हैं ना। समय बचे, पैसे बचें, इनर्जी की भी बचत करना चाहते हैं। इनर्जी कम लगे और

कार्य ज्यादा हो। सभी प्रकार की बचत की योजना करते हैं। तो अब पाण्डव गवर्नमेंट को कौन सी स्कीम करनी पड़े? यह जो सुनाया कि बिन्दु रूप की सम्पूर्ण सिद्धि की अवस्था को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़े। अभी जिस रीति चल रहे हैं उस हिसाब से तो सभी यही कहते हैं कि बहुत बिजी रहते हैं, एकान्त का समय कम मिलता है, अपने मनन का समय भी कम मिलता है। लेकिन समय कहाँ से आयेगा। दिन प्रतिदिन सर्विस भी बढ़ती जानी है और समस्याएँ भी बढ़ती जानी हैं। और यह जो संकल्पों की स्पीड है वह भी दिन प्रतिदिन बढ़ेगी। अभी एक सेकेण्ड में जो दस संकल्प करते हो उसकी डबल ट्रबल स्पीड हो जायेगी। जैसे आजकल जनसंख्या का हिसाब निकालते हैं ना कि एक दिन में कितनी वृद्धि होती है। यहाँ फिर यह संकल्पों की स्पीड तेज होगी। एक तरफ संकल्पों की, दूसरी तरफ ईविल स्पिट्स (भटकती हुई आत्माएँ) की भी वृद्धि होगी। लेकिन इसके लिए एक विशेष अटेंशन रखना पड़े, जिससे सर्व बातों का सामना कर सकेंगे। वह यह है कि जो भी बात होती है उसको स्पष्ट समझने के लिए दो शब्द याद रखना है। एक अन्तर और दूसरा मन्त्र। जो भी बात होती है उसका अन्तर करो कि यह यथार्थ है या अयथार्थ है? बापदादा के समान है वा नहीं है? बाप समान है वा नहीं? एक तो हर समय अन्तर (भेंट) करके उसका एक सेकेण्ड में नाट या तो डाट। करना नहीं है तो फिर डाट देंगे, अगर करना है तो करने लग जायेंगे। तो नाट और डाट यह भी स्मृति में रखना है। अन्तर और मन्त्र यह दोनों प्रैक्टिकल में होंगे। दोनों को भूलेंगे नहीं तो कोई भी समस्या वा कोई भी ईविल स्पिट्स सामना नहीं कर सकेगी। एक सेकेण्ड में समस्या भस्म हो जायेगी। ईविल स्पिट्स आप के सामने ठहर नहीं सकती हैं। तो यह पुरुषार्थ करना पड़े। समझा।

(ईविल स्पिट्स का रूप कौन सा है?) उनका स्पष्ट रूप है किन्हीं आत्माओं में प्रवेश होना। लेकिन ईविल स्पिट्स का कुछ गुप्त रूप भी होता है। चलते-चलते कोई में विशेष कोई न कोई बुरा संस्कार बिल्कुल प्रभावशाली रूप में देखने में आयेगा। जिसका इफेक्ट क्या होगा कि उनका दिमाग अभी-अभी एक बात, अभी अभी दूसरी बात। वह भी फोर्स से कहेंगे। उनकी स्थिति भी एक ठिकाने टिकी हुई नहीं होगी। वह अपने को भी परेशान करते हैं, दूसरों को भी परेशान करेंगे। स्पष्ट रूप में जो ईविल स्पिट आती हैं उसको परख कर और उससे किनारा करना सहज है। लेकिन आप लोगों के सामने स्पष्ट रूप में कम आयेगी। गुप्त रूप में बहुत आयेगी। जिसको आप लोग साधारण शब्दों में कहते हो कि पता नहीं उनका दिमाग कुछ पागल सा लगता है। लेकिन उस समय उसमें यह ईविल अर्थात् बुरे संस्कारों का फोर्स इतना होता है जो वह ईविल स्पिट के समान ही होती है। जैसे वह बहुत तंग करते हैं वैसे यह भी बहुत तंग करते हैं। यह बहुत होने वाला है। इसलिए सुनाया कि अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, अपनी शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में उस बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्पिट वा ईविल संस्कार

का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा। और आप लोगों का शक्तिरूप ही उन्हीं को मुक्त करेगा। यह भी सर्विस करनी है। ईविल स्पिरिट को भी मुक्त करना है क्योंकि अभी अन्त के समय का भी अन्त है तो ईविल स्पिरिट वा ईविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उन्हीं का अन्त होगा। किचड़ा सारा बाहर निकल कर भस्म हो जायेगा। इसलिए उन्हीं का सामना करने के लिए अगर अपनी समस्याओं से ही मुक्त नहीं हुए होंगे तो इन समस्याओं से कैसे सामना कर सकेंगे। इसलिए कहते हैं बचत की स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे। सिर्फ भाषण करने वा समझाने की सर्विस नहीं, अब तो सर्विस का रूप भी बड़ा सूक्ष्म होता जायेगा। इसलिए अपने सूक्ष्म स्वरूप की स्थिति भी बढ़ाओ। यह सभी प्रत्यक्ष होकर फिर प्रायः लोप होना है। प्रायः लोप होने पहले प्रत्यक्ष हो फिर प्रायःलोप होंगे। सर्विस इतनी बढ़नी है जो एक-एक को दस का कार्य करना पड़ेगा।

शक्तियों की भुजायें कितनी देखाते हैं? भुजाओं का अर्थ है इतनी सर्विस में मददगार बनना। पाण्डव समझते हैं कि यह तो शक्तियों की ही भुजायें हैं। पाण्डवों को फिर क्या दिखाया है, मालूम है? लम्बा दिखाया है। तो यह भी पाण्डवों की इतना ज्यादा मददगार बनने की निशानी है। लम्बा शरीर नहीं लेकिन बुद्धि लम्बी है। इन्हीं का आगे दौड़ना गोया शक्तियों का आगे दौड़ना है। शक्तियों को आगे रखना यही इन्हीं के दौड़ की निशानी है। अच्छा।

**वरदान:- बालक सो मालिकपन की स्मृति से सर्व खजानों को अपना बनाने वाले स्वराज्य अधिकारी भव**

इस समय आप बच्चे सिर्फ बालक नहीं हो लेकिन बालक सो मालिक हो, एक स्वराज्य अधिकारी मालिक और दूसरा बाप के वर्से के मालिक। जब स्वराज्य अधिकारी हो तो स्व की सर्व कर्मेन्द्रियां आर्डर प्रमाण हों। लेकिन समय प्रति समय मालिकपन की स्मृति को भुलाकर वश में करने वाला यह मन है। इसलिए बाप का मन्त्र है मनमनाभव। मनमनाभव रहने से किसी भी व्यर्थ बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा और सर्व खजाने अपने अनुभव होंगे।

**स्तोत्र:-**

परमात्म मुहब्बत के झूले में उड़ती कला की मौज  
मनाना यही सबसे श्रेष्ठ भाग्य है।

## सूचना

आप सबको ज्ञात हो कि बापदादा के अति स्नेही अनन्य रत्न बहुत फास्ट गति से अचानक का पाठ पढ़ाते एडवांस पार्टों में जा रहे हैं। शिवरात्रि से अब तक 5 बाबा के अति समीप स्नेही, सेवाधारी समर्पित बच्चों ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली।

- 1) 23 फरवरी 2009 को प्रातः 3.00 बजे बाबा के मधुर गीत सुनते, योग करने के पश्चात धनबाद सेवाकेन्द्र पर समर्पित रूप में रहते अपनी सेवायें देने वाले श्रीवास्तव भाई ने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। आपने 1966 में ज्ञान प्राप्त किया और बेहद सेवाओं के निमित्त बनें तथा समर्पित रूप से सेवाकेन्द्र पर रहते अपनी सेवायें दी।
- 2) 24 फरवरी को सवेरे 4.00 बजे, पूना सबजोन की निमित्त इन्चार्ज सुन्दरी बहन जो कि 1964 में ज्ञान में आई और दादी जानकी के साथ बेहद सेवाओं में समर्पित हो गई। मीठे साकार मात पिता तथा दादियों की पालना लेकर आपने महाराष्ट्र में अनेक स्थानों पर अथक बनकर सेवायें की, अनेक सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र खोलने के आप निमित्त बनी, आपका स्वास्थ्य वैसे कुछ समय से ठीक नहीं था। शिवरात्रि मनाने के पश्चात आपने रात्रि विश्राम किया, थोड़ा बुखार आया और सांस की तकलीफ होते अमृतवेलें बाबा की गोद में आत्मा उड़ गई।
- 3) 25 फरवरी 2009 प्रातः 1.30 बजे जयपुर राजापार्क सबजोन की निमित्त इन्चार्ज निर्मला बहन अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। आप 1955 में परिवार सहित ज्ञान में आई और 1957 में आप समर्पित होकर कानपुर में गंगे दादी के साथ रहकर अपनी सेवायें दी। उसके पश्चात पंजाब तथा राजस्थान में अनेक सेवास्थानों पर सेवायें की। वर्तमान समय आप जयपुर तथा राजस्थान में अनेक सेवाकेन्द्रों को सम्भाल रही थी। आपकी लौकिक बेटी पूनम बहन वहाँ ही आपके साथ सेवा पर रही और युगल विजयशंकर भाई मधुबन में रहकर अपनी सेवायें दे रहे हैं।
- 4) 3 मार्च 2009 को जालन्धर सेवाकेन्द्र की संचालिका साकार मात-पिता के हस्तों से पत्नी शुक्ला बहन जो अपनी 4 लौकिक बहनों के साथ समर्पित हुई। जालन्धर की राज बहन आपकी लौकिक बड़ी बहन हैं, साथ में कृष्णा बहन और अरूणा बहन शिमला में रहकर समर्पित रूप से सेवायें दे रही हैं। आप चारों बहनों ने पहले-पहले जब अमृतसर में सेवायें शुरू हुई तब ज्ञान लिया और साकार मात पिता एवं विशेष दादी चन्द्रमणि की पालना लेते आप चारों बहनों ने झटक बन समर्पित होकर अपनी अथक सेवायें दी।
- 5) 3 मार्च को ही हुबली ज़ोन के कनेक्शन में मस्की सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज शान्ता बहन, जिनकी उम्र केवल 38 वर्ष थी। मधुबन में सेवा के लिए आई थी, कुछ समय से आपको टी.बी. की प्रॉब्लम थी। अहमदाबाद में आपको इलाज के लिए भेजा गया। लेकिन आप भी वहाँ से वापस मधुबन आते समय 3 तारीख को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। आप 1996 से समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रही थी। आपका अन्तिम संस्कार सभी बेहद परिवार की स्नेह भरी श्रद्धांजलि के साथ, मधुबन के चारों धामों की यात्रा कराते हुए आबू में ही किया गया।

इस प्रकार बाबा के अनन्य बच्चों का अचानक जाना सभी को एवररेडी का पाठ पढ़ा रहा है। इन सभी महान आत्माओं के प्रति मधुबन में रोज़ मुरली क्लास के पश्चात् विशेष योग भी रखा जाता है। ओम् शान्ति।